Dr. Raj Gopal Page(1)
Guest Professor
Department of Philo
S.S.J College Ramnagar

न्याय दर्शन सामान्य परिचय

भारतीय दर्शन की चिन्तन परम्परा में न्याय दर्शन का प्रमुख स्थान है। इस दर्शन के प्रवर्तक महर्षि गौतम है। इनका अन्य नाम अक्षपाद भी है। इस दर्शन का उद्भव एवं विकास अन्यान्य दार्शनिक सम्प्रदायों की तरह जीवन और जगत की समस्याओं का समाधान करने के प्रयास में हुआ है। इसका भी अंतिम लक्ष्य मोक्ष की प्राप्ति, और दुःखो का विनाश है। इसके लिए वे तत्वज्ञान को साधन मानते हैं। इसमें इस सन्दर्भ में प्रमाणों की सूक्ष्मतम विवेचना किया गया है। उनके अनुसार प्रमाण, प्रमेय आदि सोलह पदार्थों का का सम्यक ज्ञान होने पर दुःख एवं उनके कारणों का समूल नाश होता है। मोक्ष की अनुभूति तत्व ज्ञान अर्थात वस्तुओं के वास्तविक स्वरूप को जानने से ही हो सकती है। एतदर्थ उपरोक्त सोलह पदार्थों का ज्ञान आवश्यक है। ये सोलह पदार्थ निम्नलिखित हैं।

(1) प्रमाण ⇒ ज्ञान के साधन को प्रमाण कहा जाता है। न्याय के मतानुसार प्रमाण चार हैं। वे हैं - प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द और उपमान। प्रमा (यथार्थज्ञान) के साधन को प्रमाण कहते हैं।

(2) प्रमेय ⇒ ज्ञान के विषय को प्रमेय कहा जाता है। प्रमेय के अन्दर ऐसे विषयों का उल्लेख किया जाता है जिनका वास्तविक ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक है। दूसरे शब्दों में प्रमा (यथार्थ ज्ञान) के विषय को प्रमेय कहते हैं। इसमें आत्मा, शरीर, पंचज्ञानेन्द्रिय, अर्थात (इन्द्रियों के विषय) बुद्धि, मन, प्रवृत्ति, दोष (राग द्वेष, मोह) प्रेत्यभाव (पुनर्जन्म) फल, दुःख एवं अपवर्ग, ये बारह प्रमेय न्याय दर्शन में स्वीकार है।

(3) संशय — यह मन की वह अवस्था है जिसमें मन के सामने दो या अधिक विकल्प होते

यह मन की अनिश्चित अवस्था है। जैसे दूर से किसी वस्तु को देखकर यह निश्चित नहीं कर पाना कि वह आदमी है या कोई वस्तु है। यह न निश्चित ज्ञान है, न ज्ञान का पूर्ण अभाव है और न भ्रम है।

(4) प्रयोजन :- जिस वस्तु के प्राप्ति के लिए जो काम किया जाता है उसे प्रयोजन कहा जाता है।

(5) दृष्टांत ⇒ यह वह सर्वसम्मत उदाहरण है जिसे वादी एवं प्रतिवादी दोनों स्वीकार करते हैं। यह अपने तर्क की पुष्टि के लिए दिया जाता है।

(6) सिद्धान्त :⇒ किसी दर्शन की स्थापित मान्यता को सिद्धान्त कहते हैं। जैसे चैतन्य को आत्मा का आगन्तुक गुण मानना न्याय दर्शन का एक सिद्धान्त है।

(7) अवयव :⇒ अनुमान के अवयव को अवयव कहा जाता है। अनुमान के अवयव पाँच है। अनुमान की प्रक्रिया में हेतु के प्रत्यक्ष ज्ञान से पक्ष में किसी विषय को सिद्ध किया जाता है। सभी अनुमान में पाँच अवयव स्वीकार किये जाते हैं। अनुमान मे तीन वाक्य होते हैं - पक्ष, साध्य, हेतु

(i) पक्ष ⇒ जिसके संबंध मे अनुमान किया जाता है - पहाड़ पक्ष है।

(ii) साध्य ⇒ पक्ष के संबंध में जो कुछ सिद्ध किया जाता है उसे साध्य कहते हैं। आग साध्य है।

(iii) हेतु ⇒ जिसके द्वारा पक्ष में साध्य को होना बतलाया जाता है उसे हेतु कहते हैं, धुआँ

(8) तर्क :→ यदि किसी बात को साबित करना हो, तब उसके उल्टे को सही मानकर उसकी अप्रामाणिकता को दिखलाना तर्क है।

(9) निर्णय :→ यह किसी विषय का निश्चित ज्ञान है जो किसी प्रमाण के द्वारा प्राप्त होता है। यह संशय के निराकरण के बाद प्राप्त होता है।

(10) वाद :→ वाद उस विचार को कहा जाता है जिसमें प्रमाणों और तर्कों की सहायता से विपक्षी के निष्कर्ष को काटने का प्रयास किया जाता है।

(11) जल्प :- जीतने की अभिलाषा से तर्क करना जल्प कहा जाता है। इसका उद्देश्य वादी और प्रतिवादी दोनों में विजय प्राप्त करना है न कि ज्ञान प्राप्त करना।

(12) वितण्डा :→ यह भी केवल विरोधी को पराजित करने के लिए किया जाता है। यह जीतने के उद्देश्य से नहीं किया जाता है। इसका एकमात्र उद्देश्य अपने विरोधी के विचारों को खण्डन करना होता है।

(13) हेत्वाभास :- यह उस अनुमान का दोष है जो अयथार्थ हेतु के कारण उत्पन्न होता है। प्रत्येक अनुमान हेतु पर निर्भर होता है। हेतु के दोष को हेत्वाभास कहते हैं।

(14) छल :→ वाद में किसी व्यक्ति की कही हुई बात का अर्थ बदलकर उसमें दोष संकेत करना छल है। छल तीन प्रकार के हैं।
(i) वाक् छल, (ii) सामान्य छल (iii) उपचार छल

(15) जाति :⇒ जाति भी छल की तरह एक प्रकार का दुष्ट उत्तर है। समानता और असमानता के आधार पर जो दोष दिखलाया जाता है वह जाति है। यह एक प्रकार का दुष्ट उत्तर है। इसमें विरोधी के निर्दोष उत्तर का भी खण्डन किया जाता है।

(16) निग्रह स्थान :⇒ वादविवाद की वह स्थान जहां विरोधी को हार स्वीकार करनी पड़ती है निग्रह स्थान है।

न्याय दर्शन के मुख्य शब्द।

(i) पक्ष
(ii) साध्य
(iii) हेतु

(iv) प्रमा :– वास्तविक ज्ञान को प्रमा कहते हैं। वस्तु का उसी रूप में ग्रहण करना जिस रूप में वस्तु है 'प्रमा' है। यह अनुभव पर आधारित होता है। इस प्रकार यथार्थ अनुभव प्रमा है।

(v) अप्रमा :⇒ अयथार्थ ज्ञान को अप्रमा कहते है संशय, भ्रम, तर्क अप्रमा के कोटी मे आते हैं। जैसे - रस्सी को सांप समझना

(vi) प्रमेय ⇒ ज्ञान के विषय को प्रमेय कहते हैं।

(vii) प्रमाण

(viii) प्रमाता :⇒ ज्ञान प्राप्त करने वाले को प्रमाता कहते है।

(ix) हेतु और साध्य के बीच नियत पारस्परिक संबंध को व्याप्ति कहते है। यह दो प्रकार का होता है/ (i) सम० व्याप्ति (ii) असम व्याप्ति